जनाबे फातेमा ज़हरा (अलै.)

उठी है आज वह ऐ मोमिनो दुनिया से मासूमा
पदर के ग़म में आदा ने जिसे रोने से भी रोका

किए ऐसे जनाबे सैय्यदा पर ज़ुलम दुनिया में
रहीं बादे नबी पच्चानवे दिन दहर में ज़हरा

समझ के बकसो - बेबस नबी ने बाद आदा ने
किया बाग़े फिदक भी गज़ब तोड़ा घर का दरवाजा

न बे इज़्न आया जिस घर में मलक दर आये वाँ नारी
गला बांधा अली का मिन्नते करती रहीं ज़हरा

किए थे यू वसाया फात्मा ज़हरा ने हैदर से
के उन लोगों को मेरी लाश पर हरगिज़ न बुलवाना

तुम अपने हाथ से ग़ुस्लो कफ़न या बुल हसन देकर
पढ़ाना ख़ुद नमाज़ और दफ़्न करना खुद मेरा लाशा

न पड़ जाए नज़र न महरमों की मेरी मय्यत पर
शबे तारीक में ताबूत सुए क़ब्र ले जाना

ख़ता ख़िदमत गुज़ारी में हुयी हो गर कोई मुझसे
समझकर अपनी लौंडी बहरे ख़ालिक अफ़ो कर देना

बड़ी मेहनत से चक्की पीस के पाला है बच्चों को
ख़्याल ऐ बुल हसन रखना मेरे बाद इन यसीरों का

अगर कोई ख़ता हो या अमरिल मोमिनीं इनसे
सज़ा देने से बे माँ का समझकर दर गुज़र करना

दिनों तारीखों साल ऐ 'फिक्र' यू रहलत का लिखा है
दो शमबा तीसरी माहे शशुम सन ग्यारह हिजरी था